Regarding transfer of land in Tughlakabad in Delhi

श्री रामवीर सिंह बिधूड़ी (दक्षिण दिल्ली) : आदरणीय सभापति महोदया, तुगलक वंश के शासकों ने 700 साल पहले 2,800 बीघा जमीन पर तुगलकाबाद गांव को बसाया था। जब सन् 1857 में आजादी की पहली लड़ाई लड़ी गई थी, तुगलकाबाद गांव और महरौली के समीप तंवर गोत्र के 12 गांवों ने अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह कर दिया था। अंग्रेजों ने उन गांववासियों को मौत के घाट उतार दिया था। अंग्रेजों ने दंड के रूप में तुगलकाबाद गांव की 2,800 बीघा जमीन जब्त कर ली थी। सन् 1995 में बिना किसी नोटिफिकेशन के वह जमीन एएसआई को ट्रांसफर कर दी गई थी।

आदरणीय सभापति महोदया, सन् 1993 के बाद जो मकान बने थे, एएसआई ने उनको तोड़ने का नोटिस दे दिया है। मैं आपके माध्यम से सरकार से यह आग्रह करना चाहता हूं कि उस नोटिस को वापस लिया जाए। अंग्रेजों ने जो सजा दी है, उस सजा से गांववासियों को मुक्ति दिलवाई जाए। मैं समझता हूं कि सन् 1857 के शहीदों के प्रति यह सच्ची श्रद्धांजलि होगी। मैं आपके माध्यम से सरकार से यह मांग करना चाहता हूं।

माननीय सभापति : माननीय सदस्यगण, मेरे पास 80 से ज्यादा सदस्यों के नाम हैं तथा समय सीमित है। अगर आप एक मिनट में अपनी बात समाप्त करेंगे, तभी सभी माननीय सदस्यों को बोलने का मौका मिलेगा।

श्री जितेंद्र कुमार दोहरे ? उपस्थित नहीं।

श्री नारायणदास अहिरवार ? उपस्थित नहीं।

श्री अभिमन्यु सेठी जी।